International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832, (Print), E-ISSN- 2320-5474, July, 2013 VOL-V * ISSUE -54

शोध पत्र- हिन्दी

July,2013

भारतीय नैतिकमूल्यः बदलते परिदृश्य

* डॉ. सुनीता डोगरा

* आर. आर. एम के आर्य महिला महाविद्यालय,

मानवीय क्रियाओं में आचार व्यवहार की अच्छाई या शिवत्व ही भारतीय नैतिकमूल्यों का आधार है। भारतीय संस्कृति में उन्हीं नैतिकमूल्यों को सच्चे मानवीय मूल्य माना गया है जो समाज मूल्यों के विरोधी ना होकर उनके पोषक हों । वैदिककाल से लेकर आधुनिक भारतीय समाज तक नैतिक चिंतन की एक अविरल धारा प्रवाहित रही है। इन नैतिकमूल्यों में शुद्ध आचरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। किसी ना किसी रुप में प्रत्येक भारतीय दर्शन ने मुक्ति को ही जीवनादर्श के रुप में सामने रखा है। मुक्ति प्राप्ति के लिए सदाचार के नियमों की पालना आवश्यक है। इस तथ्य पर वैदिक और अवैदिक सभी संस्थाओं[1] में बहुत हद तक सामंजस्य मिलता है।

on भारत के प्राचीनतम आधार ग्रंथ हैं । जिनमें सर्वप्रथम नैतिकमूल्यों की विवेचना कर सुख और ऐश्वर्य को जीवन का परम साध्य मान लौकिक सुखों के साथ–साथ कर्म करने के बाद परलौकिक सुखों की dkeuk भी की गई है। इनमें शुद्ध और व्यवस्थित आचरण , कर्ममार्ग और भक्तिमार्ग को समान रुप से महत्वपूर्ण माना गया है। दया, आतिथ्य, दान, सत्यता तथा अहिंसा आदि गुणों को वेदों में सदगुण के और जादू टोना और चरित्रहीनता को मानवीय दुर्गुण माना गया है। इनमें पहली बार हिन्दू समाज को चार वर्गों में विभाजित करने का संकेत मिलता है। परिवार को एक इकाई मान कर व्यक्ति का धर्म परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति कर्तव्य पालन करना बताया गया है।

mifu"kn का प्रमुख आदर्श है– ईश्वर से एकाकार, शुद्ध आचरण, विवेकपूर्ण जीवन,संसार और मनुष्य से प्रेम । उपनिषद् विश्वबंधुत्व की प्रेरणा देते हैं।

/ke l = और Lefr ;k में प्रत्येक वर्ग के कर्त्तव्यों को विस्तृत रुप में विवेचित किया गया है।

^jkek;.k और egkHkkjr में भी वैदिक नियमों को स्वीकार कर आनंद प्राप्ति को जीवनादर्श माना है। महाभारत के नैतिकमूल्यों का आधार मनोवैज्ञानिक है। उनके अनुसार सभी मनुष्य सुख की चाह और दुख से घृणा करते हैं, पर यह संसार सुख दुःख मिश्रित है अतः मनुष्य का लक्ष्य उस स्थिति को प्राप्त करना होना चाहिए जिसमें उसे पूर्ण संतोष की प्राप्ति हो । इनमें मानव कल्याण , पारिवारिक सद्भावना, सत्य, अहिंसा, आत्मनियंत्रण, दया, त्याग इत्यादि नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठिता की गई है।

xhrk के अनुसार मानव जीवन के दो आदर्श हैं– आत्मलाभ और लोकसंग्रह। इसमें वर्णाश्रम धर्म कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गीता का नीतिसिद्धांत आनंदवाद और समन्वयवाद है । फलासक्ति त्याग कर कर्तव्य करते रहना संन्यास से श्रेष्ठ है।

ck)n'ku में दया, अहिंसा, त्याग,परदुख निरोध इत्यादि को ही जीवनादर्श माना गया । जैनदर्शन में भी जीवात्मा की पूर्णतः शुद्धि पर बल दिया गया है। अहिंसा, सत्य,अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को मनुष्य के सम्यक् चरित्र विकास में आवश्यक माना गया है।

'kdjkpk; का नैतिकदर्शन तत्वचिंतन पर आधारित है। इन्होंने एक मात्र ज्ञान को ही मोक्ष का साधन माना है। वेदांत का अध्ययन मनुष्य को अनादि अविद्या पर विजय प्राप्त कराने में सहायक होता है परन्तु यदि साधना से चिंत को शुद्ध ना किया जाए तो केवल वेदांत के सत्यों का अध्ययन भी निरर्थक हो जाता है।

लगभग सभी हिन्दू दर्शनों में नैतिकमूल्यों का विविध रुपों में विवेचन हुआ है। उपनिषदों ने यहां एक ओर परमतत्व के गहन प्रश्न को उठा ब्रह्मज्ञान को ही जीवन का यथार्थ लक्ष्य माना है वहीं दूसरी ओर आत्मसाधना और शील के व्यवहारिक पक्ष पर भी बल दिया है। ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र का समन्वय कराने के उद्देश्य से ही गीता में निष्काम कर्म को प्रतिपादित किया गया है।

jkekut ने अपने भक्तिमार्ग में उपनिषदों और गीता के मुख्य संदेश को ही निहित किया है। मध्ययुग के भारतीय नैतिकमूल्यों पर अद्वैत वेदांत की तुलना में भक्तिमार्ग की वैष्णव परम्परा का ही अधिक प्रभाव पड़ा। इस्लाम के सूफीमत से इस प्रवृति को बल मिला । मध्ययुगीन नैतिकमूल्यों पर संतकाव्य के मानवतावाद का अधिक प्रभाव पड़ा ।

xk/khfpru में अनेक स्वदेशी और विदेशी स्वस्थ परम्पराओं का समन्वय मिलता है। उपनिषदों की आत्मसाधना जैनों की अहिंसा, बुद्ध की अनुकम्पा और प्रेम, गीता का कर्मयोग, इस्लाम का विश्वन्धुत्व और रस्किन, टालस्टाय के विचारों से प्रभावित गांधी के विचार भारतीय नैतिकमूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बाहरी संस्कृतियों के अतिक्रमण सम्मिश्रण तथा व्यक्तिवादी विचारधारा के फलस्वरुप भारतीय मानवीय मूल्यों में अनेक बदलाव आये । पुरामूल्यों के छिटाव और नवमूल्यों की स्थापना के इस संक्रान्तिकाल में परम्रागत मूल्यों का अस्तित्व प्रायः समाप्त होता जा रहा है। नैतिकमूल्यों के विघटन से द्वन्द्वग्रस्त बन जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति अनास्था दिखाकर

भी आधुनिक मानव पूरी तरह नवीन मूल्यों से जुड़ नहीं पा रहा। प्राचीन आदर्शों और मूल्यों से विद्रोह कर उठा यह व्यक्ति नवोन्मेश और आधुनिक सचेतना में अपनी पहचान बनाना चाहता है लेकिन जीवन पुराने आधारों को तोड़ चुका है या यों कहिए कि वे आधार टूट चुके हैं क्योंकि उन्हें नई परिस्थितियों में टूटना ही था और नए आधार अभी बन नहीं पाए हैं, वे बन रहे हैं किन्तु बार–बार बाढ़ का पानी उन्हें गिरा दे रहा है।'[2]

धर्मसम्बन्धी रूढ़ प्रवृतियों और पद्धतियों को भी आज के व्यक्ति ने स्वीकारा नहीं है । जिनके अनुसार–पिता सारे कुटुंब का शासक और रक्षक माना जाता था, नारी बहुत सी सीमाओं में गृहस्थी तक ही सीमित थी। मित्र और पड़ोसी मित्रतावश प्राणों को न्यौछावर करने वाले और आड़े समय में काम आने वाले थे। प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए सर्द आहें भर कर, घुट घुट कर जीने वाला त्यागी था। वस्तुतः मनुष्य सामान्य ज़िन्दगी न जी कर इन आरोपित आदर्शों को जीता था।

आज व्यक्ति अपने आन्तरिक आक्रोश का प्रगटावा पुरा समाज सम्बन्धी शालीनता के आवरण को उतार कर रहा है। प्राचीन मान्यताओं में 'सत्ताधारी' के प्रति जो श्रद्धा भाव प्रचलित था, आज उसमें भी परिवर्तन हुए हैं। सत्ताधारी–राजा की जगह देश के नेताओं ने ले ली है पर उनके अधीनस्थ, उनकी अत्यधिक कृपा प्राप्त करने वाले भी, उनकी नजर घूमते ही उनके प्रति अपने मन के आक्रोश को प्रकट करने लगते हैं। बदलती सामाजिक परम्पराओं में आधुनिक व्यक्ति का जीवन असन्तुलित होता जा रहा है।पुरा परिवार मूलतः दाम्पत्य सौहार्द, आदर्शो और नैतिकता के प्रतीक थे, जिन में बच्चों को पारिवारिक झगड़ों और क्लेशों से मुक्त रख कर कुछ आदर्शो एवम् नैतिकमूल्यों के आधार पर पाला जाता था। आधुनिक समाज में परिवार सम्बन्धी प्राचीन मूल्य भी टूटे हैं। सम्बन्धों की परम्परित धारणायें खण्डित हो गई है। पारिवारिक मूल्य–मान्यताओं में धनार्जन का दायित्व पुरुष पर था और औरत घर की सीमा में बंद पुरुष पर निर्भर करती थी लेकिन आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष से कन्धे से कन्धा मिला कर चल रही है। ये नारियां प्राचीनता के प्रति विद्रोह, संघर्ष और परिणामस्वरुप स्वतंत्रता का मूर्त रुप लेकर सामने आई हैं। प्रायः प्रत्येक नारी को कर्म–संघर्ष–बोझ को अपनाना पड़ा है, क्योंकि वह जान चुकी है कि जिस व्यक्ति के पास शक्ति अर्जित करने की क्षमता है, उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं। वस्तुतः समाजार्थिक ^lkf'kvk bdkfufed* कारण ही समस्त मूल्यवान परिवर्तनों के मूल में हैं ..... आत्मीय सम्बन्धों के बीच अर्थ का विषधर कुण्डली मार कर बैठ गया है।[3]

पहले संयुक्त परिवार व्यवस्था थी और प्रत्येक पारिवारिक सदस्य पारिवारिक प्रतिष्ठा की सुरक्षा करना अपनी जिम्मेदारी समझता था।पत्नी पति की अनुगामिनी होती थी लेकिन आज स्थिति यह है कि किसी पारिवारिक स्नेहिल मध्यस्थ के बिना पति–पत्नी अपने–अपने अहम् की सीमाओं में कुछ इस कदर खींचने लगे हैं कि अधिकतर की समस्या का समाधान एक अन्य त्रस्त समस्या ^rykd* के रुप में होता है।

पुरामूल्य विघटन में सब से गहन विघटन यौन–मान्यताओं में परिवर्तन से आया है। यौन विषयक पुरामूल्यों में पुरुष और नारी दोनों ही के लिए संयम का विधान था, नारी के लिए तो विशेषता । विवाह–संस्था स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों को प्रामाणिकता देती है। इससे बाहर के संबंध न केवल असामाजिक बल्कि पापपूर्ण भी माने गए हैं। स्त्री–पुरुष को इनके प्रति गम्भीर बनाने के लिए इन्हें अध्यात्मिक धरातल पर भी प्रस्तुत किया गया है। समाजशास्त्रियों ने इस दुर्ग की प्राचीरों को दृढ़ बनाने के बराबर प्रयत्न किए हैं। परन्तु समकालीन परिवेश में पश्चिम से एक ऐसी बाढ़ आई कि उसने इस दुर्ग की दीवारों को ध्वस्त करना आरम्भ कर दिया है। इससे पहले की पानी सिर के ऊपर से गुजर जाए हमें नैतिकमूल्यों को पुनः समाज सापेक्ष बना अपनाना होगा, ताकि हमारा देश जो अपने नैतिकमूल्यों एवं संस्कृति के कारण दुनिया में एक विशिष्ट स्थान रखता है, वह सदा कायम रह सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. वर्मा, अशोक कुमार, नीतिशास्त्र की रुपरेखा, पृ. 11–21, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. मिश्र, रामदरश , आज का हिन्दी साहित्य संवदेना और दृष्टि, पृ. 155, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली
3. सिंह, पुष्पपाल , समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ, पृ. 38, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,